24 April 20 M.F.A - II Sem (Theory IV) (24)

Sub- History of Indian Sculpture.

(5). नायककाल (1600-1700ई०)

"मदुरै" नायक राजवंश की राजधानी थी। सन 1565 ई० मे विजय-नगर राज्य के पतन के बाद नायक वंश ने तमिल प्रदेश मे कन्याकुमारी तक शासन किया। नायक वंशी राजाओं द्वारा बनवाये गये मन्दिरो मे मदुरै, श्रीरंगम, तिरुनेलवेली तथा रामेश्वरम है।

मदुरै का मिनाक्षी मंदिर इनमे सर्वाधिक विकसित है। और प्रसिद्ध है। यह मन्दिर सुन्दरेश्वर शिव और उसकी पत्नी मिनाक्षी का मन्दिर है। भारत की प्राचीन सभ्यता का जीता जागता प्रमाण है। इसकी कला एवं संस्कृति की भव्यता पर कोई भी राष्ट्र गर्व कर सकता है। मन्दिरो को मध्य मे रखकर उसके उसके आसपास नगर बसाना प्राचीन सभ्यता की आमबात थी। पर मीनाक्षी मन्दिर को केन्द्र मे रखकर नगर की रचना कमल के फूल की आकृति की तरह करना अपने आप मे अनूठा चमत्कार है। भारत के विशाल व भव्य मन्दिरो मे एक मीनाक्षी 'मन्दिर भी है।

दक्षिणी भारतीय स्थापत्य व शिल्प कला का बेहतरीन नमुना "मीनाक्षी मंदिर' आस्था शान्ति और भक्ति का अदभुत समन्वय है। इस मन्दिर का जितना धार्मिक व पौराणिक महत्व है।

मदुरै के नायक राजाओं और पाण्डवो की स्थापत्य राजधानी बनी और आगे चलकर दक्षिण भारत का एथेन्स कहलाया। मदुरै शहर के रोम व युनानी शासको से अच्छे राजनैतिक व व्यवसायी थे। इस मन्दिर मे अनेक छोटे मन्दिर पवित्र स्थानो भव्य विशाल मूर्तियां स्तम्भ परकोटे मिलकर लगभग 250 मी० लम्बी, 260 मी० चौडे परिसर मिलकर का निर्माण करते है। जिसकी भूल-भुलैया से निकल पाना पर्यटक के लिए आसान नही है।

पहला 'मीनाक्षी का मन्दिर' है। एवं दुसरा सुन्दरेश्वर मन्दिर जिसके चारो और गोपुरम बने है। जिन पर अनेक हिन्दू देवी देवताओ पशु-पक्षियो की आकृतियां उत्कीर्ण है

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

मदुरै मंदिर- मदुरै मन्दिर द्राविड़ स्थापत्य का उत्कृष्ठ नमूना है। जिसके सभी भागों का निर्माण एक समय में हुआ है। इसका २०० फीट और १०० फीट चौड़ा विशाल प्रांगण है। जो सीधे उस गोपुरम की ओर ले जाता है। मदुरै मन्दिर की ख्याति भव्य एवं आकर्षक गोपुरम के कारण है। यहां ११ छोटे छोटे गोपुरम हैं। इनमें बाहरी चार गोपुरम स्थापत्य शिल्प की अभिनव रचनाएँ हैं। इन प्रवेश द्वार पर मंगल के प्रतीक श्री गणेश की विशालकाय प्रतिमा रखी है। जो बरबस ही भक्तों को हाथ जोड़कर प्रणाम करने के लिए बाध्य कर देती है। मीनाक्षी की शादी का दृश्य उत्कृष्ट है।

सहस्त्र स्तम्भयुक्त प्रांगण 'मदुरै मन्दिर का महत्वपूर्ण अंग है। एवं प्रमुख आकर्षण है। वह मन्दिर के मुख्य घेरे के बाहर एवं पूर्वी गोपुरम की सीध में एक वृहत कक्ष है। जो ~~पाण्ड~~ 'पुडुमण्डप' के नाम से जाना जाता है।

मदुरै मन्दिर का वास्तु विन्यास आकर्षक है। इसमें दो देवालय पृथक्-२ रूप से नियोजित है। इसीलिए इसे 'दोहरा मंदिर' भी कहते हैं। पहला शिव मन्दिर, दूसरा मीनाक्षी मन्दिर है जो एक के अन्दर एक बने हुए हैं।

शिव मन्दिर- 'मदुरै मन्दिर' के अन्तिम परकोटे के अन्दर शिव मन्दिर शिव मन्दिर अवस्थित है। जो तीन भागों में बंटा है। सभा कक्ष, अन्तराल और गर्भगृह की छत चपटी है। और शिखर से मण्डित है।

डा० पूर्णिमा वशिष्ठ